Rabindranath World School,

DLF Phase III, Gurgaon. 122002

Subject:- HINDI

Class:- X

HANDOUTS

संचयन

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

Date:
Page No. 65

हरिहर काका (मिथिलेश्वर)

पाठ का सारांश -

प्रस्तुत पाठ 'हरिहर काका' कहानीकार मिथिलेश्वर द्वारा रचित समाज में फैले स्वार्थ, मोह, धर्म की आड़ में होने वाली हिंसात्मक प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है। कहानी के माध्यम से पता चलता है कि पारिवारिक संबंध भी लालच के बंधन में बंधे हुए हैं। दूसरी ओर समाज में स्थित आस्था के प्रतीक धार्मिक स्थल भी अपराधियों की शरण स्थली बन जाते हैं। 'हरिहर काका' ऐसी ही समाज को उजागर करने वाली कहानी है।

कहानी की शुरुवात लेखक द्वारा हरिहर काका के पास से वापस लौटने से होती है। हरिहर काका बचपन के पड़ोस में ही रहते थे उन्होंने लेखक को बचपन में पिता की तरह प्यार दिया था लेखक के बड़ा होने पर हरिहर काका उसे बेटे की तरह मानने लगे दोनो का संबंध बहुत ही आत्मीय बन गया। लेखक अपने गाँव की ठाकुरबारी के विषय में बताता है।

लेखक का गाँव आरा से चालिस किलोमीटर दूर हसन बाजार के स्टैण्ड के पास ढ़ाई-तीन हजार की आबादी वाला है इसी गाँव में ठाकुरबारी धार्मिक स्थल था। इसके अधीन बीस बीघे खेत थे और उसके संचालन हेतु प्रत्येक तीन वर्ष के बाद एक समिति, एक महंत तथा एक पुजारी की नियुक्ति होती है।

हरिहर काका चार भाइयों में दूसरे नंबर पर थे। दो-दो शादियाँ होने के बाद भी उनकी अपनी कोई संतान न थी। दोनो पत्नियों की मृत्यु के बाद भाइयों के परिवार के साथ रहने लगे। इनका परिवार साठ बीघे जमीन का मालिक था इस प्रकार प्रत्येक के हिस्से में पंद्रह बीघे जमीन थी। पहले भाइयों का परिवार उनकी अच्छी तरह देखभाल करता था परंतु बाद में उन्होंने हरिहर काका को रूखा-सूखा खाना देना शुरू किया भाइयों की पत्नियाँ उनका बिल्कुल ध्यान नहीं रखती थी और ताने देती थी इस कारण हरिहर काका नाराज हो चले गए ठाकुर बारी के महंत को जब ये बात पता चली तो उन्होंने

इस बात का फायदा उठाया और हरिहर काका को धार्मिक कार्यों का लालच देकर उनकी जमीन को ठाकुरबारी के नाम कर देने का दबाव बनाने लगें। हरिहर काका के भाइयों को जब इस बात का पता चला तो वे डर गए कि कहीं पंद्रह बीघे जमीन उनके हाथ से न निकल जाए किसी तरह हरिहर को समझा कर घर ले आए।

इस तरह गाँव में दो पक्ष बन गए एक हरिहर काका को कहता था कि अपनी जमीन ठाकुरबारी को दान कर दे और दूसरा उनके भाइयों के पक्ष में था। इन्हीं सब बातों के चलते ठाकुरबारी के महंत ने हरिहर काका का अपहरण कर लिया था तथा उनके मार-पीट तथा जबरदस्ती उनसे कोरे कागज पर अँगूठे के निशान लेकर जमीन अपने नाम कर ली। यह बात जब उनके भाइयों को पता चली तो उन्होंने पुलिस की सहायता से हरिहर काका को आजाद करवाया। कुछ दिन उनका व्यवहार ठीक रहा परंतु कुछ समय पश्चात उन्होंने भी हरिहर काका पर जमीन भाइयों के नाम लिख देने का दबाव बनाना शुरू किया हरिहर काका जान चुके थे कि अगर उन्होंने अपनी जमीन किसी के भी नाम की तो बाद में कोई उनका खयाल नहीं रखेगा।

आखिरकार हरिहर काका समझ चुके थे कि वह अपने जीते जी अपनी जमीन किसी के नाम नहीं लिखेंगें।

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

Date:
Page No. 68

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1 हरिहर काका कहानी के लेखक का नाम लिखिए
2 कहानी समाज की किस बुराई की ओर संकेत करती है ?
3 हरिहर काका कितने भाई थे ? और उनके हिस्से में कितनी जमीन आती थी ?
4 हरिहर काका और लेखक किस गाँव के थे ?
5 ठाकुरबारी के विषय में संक्षेप में बताइए ?
6 हरिहर काका अपने भाइयों के पास क्यों रहते थे ?
7 महंत जी ने हरिहर काका से क्या कहा ?
8 किस मुद्दे को लेकर गाँव के लोग दो वर्गों में बंट गए थे ?
9 हरिहर काका के भाई उन पर किस बात का दबाव बना रहे थे ?
10 किसने 'हरिहर काका का अपहरण किया और क्यों ?
11 हरिहर काका के भाई पुलिस थाने क्यों गए ?
12 ठाकुरबारी के महंत और हरिहर काका के भाइयों ने हरिहर काका की कैसी हालत की ?
13 इस घटना के बाद हरिहर काका की हालत कैसी हो गई और उन्होंने क्या निर्णय लिया ?
14 गाँव के नेता जी हरिहर काका के पास कौन सा प्रस्ताव लेकर पहुँचे ?
15 हरिहर काका के भाइयों और महंत जी को क्या अफ़सोस था ?
16 गाँव में डर का वातावरण क्यों था ?
17 हरिहर किसका शिकार हो चुके थे ?
18 उनकी जमीन की आमदनी से कौन मौज उड़ा रहे थे ?

Date:
70

RABINDRANATH WORLD SCHOOL GURGAON

सपनों के-से दिन

गुरदयाल सिंह

पाठ का सारांश -

प्रस्तुत पाठ पंजाबी लेखक गुरदयाल सिंह द्वारा रचित है लेखक ने पाठ को आत्मकथात्मक शैली में लिखा है। प्रस्तुत पाठ में बचपन की यादों को सहेजा गया है बचपन में स्कूल की बातें, मित्रों की बातें, डाँट-फटकार बड़े होने के बाद वही बातें सपने जैसी प्रतीत होने लगती है।

लेखक को स्कूल में पढ़ने की जगह खेलने में अधिक आनंद आता था। स्कूल में मिला गृहकार्य नही करने पर क्या-क्या योजनाएँ बनाई जाती थी और अंत में गृहकार्य न करने पर अपने-आपको मार खाने के लिए तैयार कर लेना। स्कूल की गर्मी की छुट्टियों में वह ननिहाल चले जाया करते थे वहाँ पर नाना-नानी का प्यार व महत्त्व दिए जाने को भी लेखक ने सफलता से चित्रित किया है। कभी किसी वर्ष अगर ननिहाल नही गए तो गाँव के तालाब में अपने साथियों के साथ नहाना व मस्ती करना उनको बहुत याद आता है।

लेखक पढ़ाई के लिए समय-सारिणी तो बनाते थे पर उसके अनुरूप कार्य नही कर पाते थे स्कूल जाने से उन्हें डर लगता था क्योंकि मास्टर प्रीतम चंद का व्यवहार बच्चों के लिए बहुत कठोर था। वह थोड़ी सी भी अनुशासन हीनता सहन नही करते थे। जो स्कूल के नियमों का पालन नही करता था, उसे कठोर दंड देते थे।

उन्होंने पुरातन व आधुनिक शिक्षा प्रणाली की भी तुलना की है कि किस प्रकार शब्द रूप याद न कर पाने पर प्रीतम चंद मास्टर जी ने उन्हें कठोर दंड दिया जिसे हेडमास्टर सहन नही कर पाए और उन्होंने शिक्षा विभाग के डायरेक्टर को शिकायत कर उन्हें निलम्बित करवा दिया।

EARTH WORLD SCHOOL GURGAON

टोपी शुक्ला
(राही मासूम रजा)

सारांश-

प्रस्तुत पाठ प्रसिद्ध कलाकार राही मासूम रजा द्वारा लिखित है। प्रस्तुत पाठ में टोपी के पिता डॉक्टर हैं। इस पाठ में इफ्फन जो एक मुस्लिम समुदाय से है और टोपी जो एक हिंदु समुदाय से है दोनों की मित्रता को दिखाया गया है कि बचपन कितना भोला व मासूम होता है वह जाति-पाति, छोटे-बड़े का भेद-भाव नहीं करता वह तो केवल प्रेम देखता है।

बचपन में जब टोपी चौथी कक्षा में पढ़ता था तभी उसकी मुलाकात इफ्फन से हुई। दोनों में गहरी मित्रता हो गई। टोपी इफ्फन के घर जाने लगा। वहाँ इफ्फन की दादी से मिला तथा इफ्फन की दादी से टोपी को विशेष लगाव हो गया। इफ्फन की दादी उसे कहानियाँ सुनाती थी। इफ्फन के दादा प्रसिद्ध मौलवी थे। दादी पूरब की रहने वाली थी।

टोपी शुक्ला के पिता का व्यवसाय था वह पेशे से डॉक्टर थे। वह हिंदु परिवार का था। उसके परिवार में दादी, माता-पिता, भाई-बहन सभी थे लेकिन वह स्वयं को अकेला महसूस करता था। एक बार अपनी माँ को अम्मी कह देने पर उसकी बहुत पिटाई हुई। घर में सभी उसके ऊपर हुक्म चलाते थे कोई उसकी बात समझने का प्रयास नहीं करता था।

टोपी अपने सारे दुख इफ्फन की दादी के साथ बाँटता था। इफ्फन की दादी की मृत्यु के बाद टोपी अधिक उदास रहने लगा। इफ्फन के पिता का तबादला होने से वह और भी अकेला हो गया क्योंकि उसका मित्र अपने पिता के साथ चला गया था।

टोपी नवी कक्षा में दो बार फेल हो गया। एक बार घर के कामों के कारण पढ़ नहीं पाया। दूसरी बार उसे बुखार हो गया। तीसरी बार पिता के चुनाव में खड़े होने के कारण पढ़ने का वातावरण नहीं मिला अतः थर्ड डिविजन से पास होने के कारण घर वालों के उपहास का पात्र बना।

किसी ने भी पढ़ जाने का प्रयास नहीं किया कि टोपी के अनुत्तीर्ण होने का क्या कारण है। अध्यापकों की बेरुखी ने भी टोपी को हताश किया। अतः पाठ के माध्यम से समझा जा सकता है कि प्रेम का रिश्ता सब रिश्तों से ऊपर होता है,

लघु उत्तर दीजिए-

1 टोपी शुक्ला और इफ़्फ़न किस समुदाय से संबंध रखते थे?
2 टोपी इफ़्फ़न की दादी से क्यों प्यार करता था?
3 इफ़्फ़न के पिता के तबादला कहाँ हो गया?
4 किन कारणों से टोपी पढ़ नहीं पाया?
5 टोपी और इफ़्फ़न के पिता का कौन सा व्यवसाय था?
6 अध्यापकों का व्यवहार टोपी के साथ कैसा था?
7 टोपी कितनी बार फेल हुआ? और कौन सी डिविजन से पास हुआ?
8 इफ़्फ़न की दादी की मृत्यु का टोपी पर कैसा प्रभाव पड़ा?
9 कैसा रिश्ता सब रिश्तों से बड़ा होता है।
10 इफ़्फ़न की दादी कहाँ की रहने वाली थी?
11
12
13
14
15

RABINDRANATH WORLD SCHOOL ★ GURGAON ★

निबंधात्मक